एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 04, अंक: 03 (मई-जून, 2024)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

बरसाती भिन्डी की खेती

(विनोद कुमार[1], *आनंद कुमार[1], नीलम कुमारी[2] एवं रमेश कुमार गुप्ता[3])
[1]नालंदा उद्यान महाविध्यालय, नूरसराय, नालंदा, बिहार कृषि विश्वविध्यालय, सबौर, भागलपुर, बिहार
[2]सामुदायिक विज्ञान महाविध्यालय, पूसा, डा. रा. प्र. के. कृ. विश्वविध्यालय, पूसा, बिहार
[3]उद्यान विभाग, बिहार कृषि विश्वविध्यालय, सबौर, भागलपुर, बिहार
*संवादी लेखक का ईमेल पता: anandkumar1995muraul@gmail.com

भिंडी वर्षा ऋतु की प्रमुख फसलों में से एक है। भिंडी की खेती में बुआई का समय आ गया है। जून के अंतिम और जुलाई पहले सप्ताह में बरसाती भिंडी की बुआई करनी चाहिए। भिंडी की खेती के लिए किसान कृषि वैज्ञानिकों की मदद से कई तरह की नई तकनीकों को अपना कर भिंडी की खेती कर मुनाफा कमा रहे हैं| भिंडी की खेती के लिए कई प्रकार की उन्नत किस्में भी विकसित हो चुकी हैं जिनसे किसान भिंडी की फसल से ज्यादा से ज्यादा उत्पादन कर सकते है | जैसा की सभी जानते है भारत में किसान मौसम के अनुसार तरह-तरह की सब्जियों की खेती की जाती हैं | जिनमें से भिंडी लोकप्रियता काफी है | भिंडी को सामान्य रूप से अंग्रेजी में लेडी फिंगर व ओकरा के नाम से भी जाना जाता है | भिंडी को भारत में अनेकों नाम से जाना जाता है जैसे कि बिहार के अधिकांश जिलो में भिंडी को 'राम तरोई' नाम से जाना जाता है। छत्तीसगढ में 'रामकलीय' के नाम से जानते हैं। बंगला में भिंडी को स्वनाम ख्यात फलशाक, मराठी में 'भेंडी', गुजराती में 'भींडा', फारसी में 'वामिया' कहते हैं।

भिण्डी मुख्य रूप से ग्रीष्मकालीन और वर्षाकालीन फसल है। भिण्डी के उत्पादन में भारत का सम्पूर्ण विश्व में स्थान प्रथम है। आमतौर पर भारत में लगभग सभी राज्यों में भिंडी की खेती की जाती है। प्रमुख भिंडी उत्पादक राज्यों में उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखण्ड, गुजरात, महाराष्ट्र, हरियाणा, पंजाब और असम प्रमुख राज्य है।

भिंडी स्वास्थय के लिए बहुत फायदेमंद है और साथ ही साथ भिंडी में कई प्रकार के पोष्टिक तत्व और प्रोटीन मौजुद होते है। भिण्ड़ी में विटामिन ए, बी तथा सी, प्रोटिन, वसा, रेशा, कार्बोहाइड्रेट, कैल्शियम, लौह, मैग्नेशियम और तांबा प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। भिण्डी के सूखे हुए फल के अन्दर 13 से 20 % तेल की मात्रा और 20 से 24 % प्रोटीन की मात्रा पाई जाती है।

भिंडी की खेती के लिए खेत की तैयारी

खेत की जुताई करके मिट्टी को अच्छी तरह भुरभुरी कर लें। बिजाई से लगभग 3 सप्ताह पहले खेत की जुताई करते समय गोबर की खाद डालें। वर्षा ऋतु की फसल के लिए खेत को उचित आकार की क्यारियों में विभाजित कर लें। बुआई का समय जून-जुलाई है। 5-6 किग्रा बीज प्रति एकड़ खेत में डालें। कतार से कतार की दूरी 45 से 60 सेंटीमीटर और पौधे से पौधे की दूरी 30 सेंटीमीटर रखें। बीजों को रात भर पानी में भिगो दें। भीगने के बाद बीजों को छाया में सुखाकर बो दें।

भिंडी की किस्म

1. **वर्षा उपहार किस्म -** भिंडी की वर्षा उपहार किस्म पीलिया रोगरोधी क्षमता वाली है। इसकी पैदावार 40 क्विंटल प्रति एकड़ है। इसके पौधे मध्यम, लंबे व दो गांठों के बीच की दूरी कम होती है। फल लंबे सिरे वाले चमकीले मध्यम मोटाई वाले और 5 कोरों वाले होते हैं। यह किस्म 45 दिन में फल देना आरंभ कर देती है।
2. **हिसार नवीन किस्म -** दूसरी किस्म हिसार नवीन है। यह भी रोगरोधी है। यह किस्म गर्मी व वर्षा के लिए उपयुक्त है। इसकी औसत पैदावार 40-45 क्विंटल प्रति एकड़ है। तीसरी एचबीएच-142 संकर किस्म है। पीलिया रोगरोधी क्षमता होने के कारण यह वर्षा ऋतु में भी उगाई जा सकती है। इसके फल 8-10 सेंटीमीटर लंबे, मोटाई मध्यम व पांच कोर युक्त आकर्षित होते हैं। इसकी औसत 53 क्विंटल प्रति एकड़ है।
3. **परभनी क्रांति** - यह भिंडी की किस्म पीत-रोग है। यह प्रजाति 1985 में मराठवाडा कृषि विश्वविद्यालय, परभनी द्वारा विकशित की गई हैं। भिंडी की इस किस्म में फल बुआई के लगभग 50 दिन बाद आना शुरू हो जाते है। इस किस्म के भिंडी के फल गहरे हरे एवं 15-18 सें०मी० लम्बे होते है। इसमें भिंडी की पैदावार 9-12 टन प्रति है० है।
4. **पूसा ए –4** - पूसा ए-4 भिंडी की एक उन्नत किस्म है। भिंडी की यह प्रजाति 1995 में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान,नई दिल्ली द्वारा विकशित की गई हैं। भिंडी की इस किस्म एफिड तथा जैसिड के प्रति सहनशील हैं। ये किस्म पीतरोग यैलो वेन मोजैक विषाणु रोधी है। इस किस्म की भिंडी का फल मध्यम आकार के गहरे, कम लस वाले, 12-15 सेमी लंबे तथा आकर्षक होते है। इस किस्म की खास विशेषता यह है कि बोने के लगभग 15 दिन बाद से ही भिंडी में फल आना शुरू हो जाते है तथा पहली तुडाई 45 दिनों बाद शुरू हो जाती हैं। औसत पैदावार ग्रीष्म में 10 टन व खरीफ में 15 टन प्रति है० है।
5. **अर्का अनामिका** - यह भिंडी की किस्म भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बैंगलोर द्वारा विकशित की गई हैं। यह किस्म येलोवेन मोजेक विषाणु रोग रोधी है। इस किस्म के पौधे ऊँचे 120-150 सेमी सीधे व अच्छी शाखा युक्त होते हैं। इस किस्म की विशेषता यह है कि इसके फल रोमरहित मुलायम गहरे हरे तथा 5-6 धारियों वाले होते हैं। इस किस्म के फलों का डंठल लम्बा होने के कारण तोड़ने में सुविधा होती हैं। इस किस्म को दोनों ऋतुओं में उगाईं जा सकती हैं। इसकी पैदावार 12-15 टन प्रति है० हो जाती है।

खाद व सिंचाई

भिंडी में बुवाई के 3 सप्ताह पहले 5 टन गोबर की खाद प्रति एकड़ डालें। इसके अतिरिक्त 75-80 किलोग्राम यूरिया, 50 किलोग्राम डी ए पी किलोग्राम एवं म्यूरेट ऑफ़ पोटाश 30 किलोग्राम प्रति एकड़ के हिसाब से डालें। बुवाई पलेवा देकर करें और बाकी सिंचाई समयानुसार करें। बुवाई से एक दिन पहले फ्लुक्लोरालिन नामक दवा का 400 ग्राम का 250 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। समय-समय पर भिंडी की निराई-गुड़ाई जरूर करें।

भिंडी की खेती के लिए निराई व गुड़ाई

भिंडी की खेती के लिए नियमित निंदाई-गुड़ाई कर खेत को खरपतवार मुक्त रखना चाहिए। बीज की बुवाई के 15-20 दिन बाद पहला निंदाई-गुड़ाई करना बहुत ही जरुरी रहता है क्योंकि इसका सीधा

प्रभाव उत्पादन पर पड़ता है| खरपतवार नियंत्रण हेतु आप रासायनिक कीटनाशकों का भी प्रयोग कर सकते है। खरपतवारनाशी फ्ल्यूक्लरेलिन के 1.0 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व मात्रा को प्रति हेक्टेयर की दर से पर्याप्त नम खेत में बीज बोने के पूर्व मिलाने से खरपतवार नियंत्रण किया जा सकता है|

फल की तुड़ाई

भिंडी के फलों को नरम अवस्था में रेशा बनने से पहले तोड़ लेना चाहिए। फसल की तुड़ाई किस्म के अनुसार 45 से 55 दिन में शुरू हो जाती है। फलों की तुड़ाई एक दिन के अंतराल पर करनी चाहिए। भिंडी की बुवाई कभी भी कपास के पास न करें। कीटनाशक छिड़काव से पूर्व फल तोड़ लें।

बरसाती भिन्डी में लगने अवाले रोग

- **पीला रोग** सफेद मक्खी से फैलने वाला विषाणु रोग है। इस रोग में पत्तों की शिराये पीली हो जाती है। फल पीले व कम लगते हैं। वर्षा उपहार प्रभेद में पीला रोगरोधी क्षमता है।
- **जड़ गलन** में छोटे पौधों का बढ़ना रुक जाता है। पौधे पीले और जड़ गल जाती है। बीज का उपचार 2-3 ग्राम बाविस्टिन या कैप्टान को प्रति किमी बीज में मिलाकर करें।
- **जड़ गांठ रोग** में प्रभावित पौधे पीले व बौने दिखते हैं। जड़ों में गांठें बन जाती है। बचाव के लिए उन्हीं खेतों में भिंडी, टमाटर, मिर्च व कद्दू वर्गीय सब्जियों की काश्त न करें। गर्मियों में 2 से 3 बार गहरी जुताई करें।

भिंडी में लगाने वाले हानिकारक कीड़े व रोकथाम के उपाय

1. भिंडी में लगाने वाले फली छेदक सुण्डियां

फली छेदक सुण्डियां भिंडी के पौधो के कलियों के पास के स्थान पर , टहनियों तथा पत्तो में छेद करती है उसके बाद यह भिंडी के फल में सुराख करके फल को पूरी तरह से नुकसान पहुंचाती है | जिसका सीधा प्रभाव किसान को उचित मूल्य ना मिलना और उसको हानि होना होता है | इस कीट का प्रकोप मुख्य रूप से वर्षा ऋतु में अधिक होता है। इल्ली प्रारंभिक अवस्था में कोमल तने में छेद करती है | जिससे की तना सूख जाता है। फूलों पर इसके आक्रमण से फल लगने के पूर्व ही इसके फुल गिर जाते है |

रोकथाम

रोकथाम के लिए क्विनॉलफॉस 25 प्रतिशत ई.सी., क्लोरपाइरोफॉस 20 प्रतिशत ई.सी. अथवा प्रोफेनफॉस 50 प्रतिशत ई.सी. की 2.5 मिली. मात्रा प्रति लीटर पानी के मान से छिडकाव करें और आवयकतानुसार छिडकाव को दुबारा दोहराएं।

2. भिंडी में लगाने वाले सफेद मक्खी

सफेद मक्खी के व्यस्क कीट पौधों की पतियों की निचली सतह पर चिपके रहने के कारण ये वही से रस चूसना आरम्भ करते है जिसके वहज से पौधे की पत्तियों में पीला सिरारोग रोग फैल जाता है। सफ़ेद मक्खी सूक्ष्म आकार के कीट पत्तियों, कोमल तने एवं फल से रस चूसकर नुकसान पहुंचाते है। यह रोग भिण्डी में विषाणु के द्वारा और वर्षा ऋतु में फैलता है।

रोकथाम

सफेद मक्खी की रोकथाम के लिए 300-500 मि0ली0 मैलाथियान 50 ई0सी0 नामक दवाई को 200-300 लीटर पानी में अच्छी तरह घोलकर एक एकड़ भूमि में छिड़काव कराना चाहिए और आवश्यकता पड़ने पर इसी विधि को 15 दिन के बाद दोबारा दोहराएं।

3. भिंडी में लगाने वाले लालमाईट

लालमाईट की बात करे तो यह एक लाल रंग का कीट है। इस कीट के षिषु तथा व्यस्क पत्तो के नीचे की सतह से पूरा रस चूसते है। रस चूसने के वजह से ही पत्तो पर सफेद रंग के छोटे- छोटे आकार के धब्बे बन जाते है। यह कीट भिण्डी के पत्तो पर मकड़ी की तरह जाला बना देते है | इस कीट की संख्या अधिक होने के वजह से लाल माईट पतों की नोंक के ऊपर जमा हो जाती है।

रोकथाम

इसकी रोकथाम हेतु डाइकोफॉल 18.5 ई. सी. की 2.0 मिली मात्रा प्रति लीटर अथवा घुलनशील गंधक 2.5 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें एवं आवश्यकतानुसार इस विधि को दोहराए।